अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित शोधकार्यो का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

किसी भी कार्य को करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शोधकर्ता को शोध से संबंधित जानकारी हो जिससे कि वह जिस विषय पर शोधकार्य करने जा रहा है उससे संबंधित शोधकार्यो से भली–भाँति परिचित हो सके। इसके लिए उसे शोध संबंधी अन्य शोध कार्यो के संदर्भ ग्रन्थो का भली–भाँति अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने जैसा होगा। इसके अभाव में सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे पता न हो कि उस क्षेत्र में कितने कार्य हो चुके है, किस विधि से काम किया गया है, तथा उसके क्या निष्कर्ष .प्राप्त हुए है, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

डब्ल्यू. आर.बोर्ग (1965) लिखते है किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशीला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है, यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संबंधित साहित्य के द्वारा किसी भी अध्ययन से संबंधित समस्त साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है कि किस क्षेत्र में कितना कार्य किस रूप में हो चुका है? लोगों ने क्या परिकल्पनाएँ की थी? किस विधि से आंकड़ों का संग्रह व सारणीयन व

विश्लेषण करके क्या परिणाम निकाले? इसका निर्णय बड़ा ही महत्वपूर्ण है तथा अनुसंधान कार्य की वास्तविक पूर्णता में मद्द करता है।

शोधकर्ता ने उपयुक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य की समीक्षा की ताकि प्रस्तुत अध्ययन के नियोजन एवं महत्वपूर्ण पदों के निर्धारण में सहायता मिल सके।

➢ संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ :–

1. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतर दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
4. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
5. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
6. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों का नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.2 संबंधित शोधकार्यो का पुनरावलोकनः–

1. **सुनिल कुमार सिंह और मुकेश कुमार** ने अपने अध्ययन विद्यालयी प्रार्थना की आवश्यकता एवं इसके प्रति उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं, हिन्दु एवं मुसलमान विद्यार्थियों, मदरसे में पढ़ने वाले विद्यार्थियों, कला, विज्ञान व वाणिज्य के विद्यार्थियों, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों और उच्च, मध्यम और निम्न अपवर्ग के विद्यार्थियों के बीच शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति को ज्ञात करना था। इसमें न्यादर्श के रूप में कुल 930 विद्यार्थियों को लिया गया था। जिसमें उन्होंने विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। जो कि यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चयन किया गया। इस परीक्षण से यह ज्ञात किया गया कि विद्यालयी दिनचर्या की प्रारंभिक व आवश्यक क्रिया विद्यालयी प्रार्थना के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को लिंग, धर्म व विद्यालय की प्रकृति जैसे चर मुख रूप से प्रभावित करते हैं। अतः आधुनिक भारत में यह आवयक है कि संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप राष्ट्रीयहित को केन्द्र में रखकर सभी विद्यालयों में कराई जानेवाली प्रार्थना को विषयवस्तु शब्द स्वरूप व पद्धति का मूल्यांकन करके ही उसे लागू किया जाता है।

2. **डूगल विग्सम एवं आर्थर (1982):–** अपने अध्ययन महाविद्यालयी कक्षा कक्ष में मूल्यों का शिक्षण के अन्तर्गत चार प्रकार की प्रतिमानों का प्रयोग किया। अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया

कि चारों प्रकार के प्रतिमानों में प्रतिमान संख्या 3 तक की वरीयता दी गई है। सभी व्यक्ति इस बात से सहमत थे कि उच्च स्तर पर मूल्यों का शिक्षण संभव है।

3. **मरिस डेविड (1982) :–** ने अपने "अध्ययन धार्मिक पुस्तकों का अध्यन" में चर्च के ऐसे सदस्यों को लिया जिन्होंने किसी धार्मिक पुस्तक को पढ़ा हो। उस पुस्तक के अध्ययन से संबंध में विचार–विमर्श किया गया। मूल्यांकन के पश्चात् यह पाया गया कि स्वयं पढ़ना तथा दूसरों के साथ विचार व्यक्ति एवं ग्रन्थ दोनों के लिए उपयुक्त प्रक्रिया है। उच्च स्तर की प्रेरणा के लिए व्यक्ति द्वारा ही पूछना एक महत्वपूर्ण घटक पया गया तथा धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन एवं उस पर विचार–विमर्श मूल्यों के विकास में सहायक है।

4. **सिंध एच. (1983) भारत में विद्यार्थियों का जनतांत्रिक विचार, नई दिल्ली** – विद्यार्थियों में अभिवृत्ति एवं विचारों का निर्माण करने में सामाजिक, राजकीय और आर्थिक कारणों की अगत्यता इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। इस अभ्यास के लिए बिहार के गया शहर के विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के अंतिम वर्ष के 600 विद्यार्थियों को सामिल किया गया है। मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी. रेश्यों और प्रतिशत का उपयोग द्वारा पृथककरण के लिये किया गया है। जनतांत्रिक पद्धति के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति परीक्षण करने के लिए प्रश्नावली निर्माण की गई।

इस अभ्यास के निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थियों में राजकीय गुणों के प्रति दृष्टि, लघुमति मतभेद में सहिष्णुता और स्पर्धात्मक पक्ष पद्धति को उत्तेजन देने से संबंधित है। मूल्यों एवं लोक जनतांत्रिक संस्था की नयी पीढ़ी में सामाजिकरण करने में भारतीय जनतांत्रिक प्रजातंत्री कितनी मदद रूप बन सकता है, उसके बारे में जनतंत्र की वैज्ञानिक पद्धति को विकसित करने में यह अभ्यास उपयोगी है।

5. **अरूण उषा (1985) :–** ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के सेकेण्डरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि –

- शहरी क्षेत्र बालक–बालिकाओं के नैतिक मूल्य ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं की तुलना में अधिक है।
- बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा नैतिक मूल्य अधिक है।

6. **मिस्त्रीं टी.सीं. (1988)** – ने ग्रामीण शहरी और निम गुजराती, कॉलेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

यह शोधकार्य उस अध्ययन को व्यक्त करता है, जिसके द्वारा उन कारको को खोजा गया, जिससे मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अंतर पाया जाता है। इस अध्ययन हेतु आलपोर्ट की प्रश्नावली एडवर्ड की व्यक्तित्व महत्व अनुसूची और मूरे की व्यक्तित्व आवश्यक परीक्षण गुजरात के ग्रामीण व शहरी के यादृच्छिक 111 शिक्षको में

किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षक का एक नियमित गुण भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। राजनैतिक, सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया। परिणाम प्रकट करते हैं कि जो अगुजराती थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे। जबकि ग्रामीण शहरी गुजराती शिक्षक केन्द्रित थे। संघ सचेतक थे आर्थिक रूप से केन्द्रित और बहुत अधिक धार्मिक थे।

7. **महेश्वरी पी.सी. ने (1989)** – रोहिलखंड विद्यापीठ के सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के शिक्षकों–प्रशिक्षकों का अध्यापन अभिवृत्ति तथा मूल्य वृद्धि, लिंग के संबंध का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक–प्रशिक्षकों ने मूल्य एवं अध्यापन –अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना था। उपरोक्त वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों में लिंग भेद का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना था। रोहिलखण्ड विद्यापीठ के 10 कॉलेजों से सामान्य वर्ग के 426 शिक्षक–प्रशिक्षण पिछड़े वर्ग के 95 शिक्षक–प्रशिक्षण, अनुसूचित जाति के 97 शिक्षक–प्रशिक्षक को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

8. **मोहगांवकर, पी. (1990):–** मोहगांवकर द्वारा कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं की मराठी (मातृभाषा) पाठ्यपुस्तक में नैतिक मूल्यों का परीक्षण किया गया। कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवी की मराठी पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण तथा उपरोक्त शोध कार्य में अनेक नैतिक व मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखा गया। इस अध्ययन से यह पाया गया कि कक्षा सातवीं के पाठ्यपुस्तक में पाठ गद्य तथा तीन

पद्य समानता मूल्य पर आधारित हैं। तीनों कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में भाईचारा मूल्यों का संदर्भ नहीं है। कक्षा छठवीं के पाठ्यपुस्तक में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ नहीं है। परन्तु कक्षा सातवीं, आठवीं के पाठ्यपुस्तक में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ है।

9. **खांडेकर, एम.पी. (1991):–** खांडेकर, एम.पी.नागपुर (महाराष्ट्र) द्वारा स्नातक स्तर के हिन्दी पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया गया। स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय के पाठ्यवस्तु में शैक्षिक मूल्यों का शोध करना, हिन्दी पाठ्यपुस्तक की क्षमता एवं कर्मियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर उपरोक्त अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष पाये गयेः–

- पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का प्रतिशत औसत से कम पाया गया। पाठ्य पुस्तक के विषयवस्तु में शैक्षिक मूल्यों के प्रति सार्थकता पायी गयी।

10. **वैझ.डी.एस. (1991):–** इन्होनें कक्षा दसवीं का पदार्थ विज्ञान पाठ्यपुस्तक के पाठ्यवस्तु में जीवन/मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया। विज्ञान को जीवन का आधारभूत बनाना एवं जाति, धर्म, क्षेत्र भाषा में अंधविश्वास भेद की प्रति विद्यार्थियों को अवगत कराना एवं सक्षम बनाना यह शोध के मुख्य उद्देश्य रखे गये। प्रस्तुत शोध कार्य में मूल्य समूह डिजाइन का प्रयोग किया गया। कक्षा 10वीं के 38 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन कर उनको 19 जोड़ियों में विभाजित किया। यह जोड़ियाँ कक्षा 9वीं की पदार्थ विज्ञान विषय में वार्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी।

प्रदत्तों के संकलन के लिए दसवीं की पाठ्यपुस्तक में नाटकात्मक पद्धति एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यभाव, प्रामाणिक विचलन, समालोचन अनुपात का प्रयोग किया गया। इस शोधकार्य में यह पाया गया कि विज्ञान विषय विद्यार्थियों के नैतिक विकास में मद्द करता है, पदार्थ विज्ञान में मूल्यों के विकास के प्रति परम्परागत अध्यापन पद्धति से नाटकीय पद्धति अधिक प्रभावी है।

11. **अंबार्सू, एम. (1992):–** इन्होनें उच्च प्राथमिक शाला की अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक में मूल्यों का शोध किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य तमिलनाडू शासन द्वारा प्रकाशित कक्षा छटवीं, सातवीं, आठवीं, की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में मूल्यों का शोध करना एवं कक्षा छटवीं, सातवीं, आठवीं के विद्यार्थियो में मूल्यों के प्रति जागरूकता के स्तर का शोध करना है। देवाकोटाई जिले के कक्षा छटवीं, सातवीं, आठवीं के कुल विद्यार्थियों में से 10 प्रतिशत विद्यार्िीयों को चुना गया जिसमें से प्रत्येक कक्षा के 100 विद्यार्थी ऐसे कुल 300 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है, प्रदत्तों के संकलन के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाणिक विचलन का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि कक्षा छटवीं, सातवीं के विद्यार्थियों में मूल्य जागृति का स्तर औसत रूप में है।

12. **शर्मा मिनु (1992)** ने शिक्षकों का सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं मूल्यों के राष्ट्रीय अभिवृत्ति को जानने के लिए अध्ययन किया।

न्यादर्श के रूप में आगरा के 1200 प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षकों को लिया गया। SEC Scale (भारद्वाज), Attitude Scale (एन.एस.चौहान) और (एस.एन.चौहान) के उपकरणों का उपयोग किया गया है। इसका निष्कर्ष यह आया कि विभिन्न स्तर के शिक्षकों में सामाजिक, आर्थिक स्तर अलग-अलग पाया गया परन्तु उनकी Value Orientation राष्ट्रीय अभिवृत्ति एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का आपसी संबंध रखते है।

13. **वैशिष्ट, ए. (1996):-** सायन्स रिलीजन सुपरस्टीशियन स्कूल सायन्स वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं मूल्यों के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को जागृत कर समाज में अंधश्रद्धा दूर करने की आवश्यकता है। कुछ वैज्ञानिक मूल्य जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सहनशीलता, शोध प्रवृत्ति, सत्यता के बारे में विद्यार्थी तथा शिक्षक को अवगत करना चाहिए।

14. **चींनारा बीं., (1997) शिक्षा और जनतंत्र, नई दिल्ली :-** यह पुस्तक जनतांत्रिक मूल्य से संबंधित है। विद्यार्थियों को एन्स्ट्रकशनक टेकनिक के द्वारा स्वतंत्रता, स्वायतता की ओर विषयाभिमुख करने के लिए वर्तमान शिक्षकों और भविष्य के शिक्षकों के आधारभूत सामग्री यह पुस्तक में है। जनतांत्रिक मूल्यों के सैद्धांतिक सिद्धान्तों को इस विभाग में शामिल किया गया है। शिक्षा में जनतांत्रिक मूल्य की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में भी किताब में वर्णन है। रूपांतरित

वेल्यू सर्वे कन्फ्रन्टेशन इस्ट्रूमेन्ट और वेल्यु क्लेरिफाईग इस्ट हमकों जनतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता प्रदान करता है और मूल्यों के प्रति जागरूकता प्रदान करना और मूल्यों की उपयोगिता से अवगत कराता है।

2.3 उपसंहार –

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के अध्ययन के क्षेत्र में अधिक शोध नहीं हुये है। प्रारंभिक एवं माध्यममिक स्तर पर शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति का अध्ययन किसी शोधकर्ता द्वारा नहीं किया गया है।

अतः उपरोक्त शोध को प्रस्तुत शोधकार्य हेतु अध्ययन बनाया गया है।